Nigrah Darun Saptkam Pakshiraj Stotram

निग्रह दारुण सप्तकम् पक्षिराज स्तोत्रम्

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

भगवान् शिव अपनी रुद्रता एवं अपार शक्ति के कारण प्रसिद्ध हैं। शिव के भीषण एवं संहारकारी रुद्रावतारों में सबसे तीक्ष्ण पक्षिराज को ही कहा जायेगा। इसलिये इनके काम्य प्रयोगों में विशेष सतर्कता का ध्यान रखना चाहिये। पक्षिराज की तंत्रोक्त उपासना करने से व्यक्ति असाधारण शत्रुओं एवं विकट परिस्थितियों पर शीघ्र ही विजय प्राप्त करता है। सरसों के तेल से पक्षिराज स्तोत्र द्वारा शिवलिंग पर अभिषेक करने से असाध्य रोग एवं प्रेतबाधा से मुक्ति मिलती है। सरसों के तेल से अभिषेक करने के पश्चात् शान्ति हेतु पुनः दुग्ध, दही या गन्ने के रस से अभिषेक करना चाहिये। अभिषेक के अतिरिक्त पाठ करने से भी परकृत्या, शत्रुबाधा एवं ग्रहपीड़ा से मुक्ति मिलती है। पक्षियों के लिये जल पानी की व्यवस्था करने एवं कैद पक्षियों को मुक्त कराने से शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। इनकें साथ यथासम्भव श्रीदुर्गा एवं कालीजी की पूजार्चना करना अनिवार्य है। आवश्यक गुप्त विधान गुरुमुख से प्राप्त करें।

विनियोग– ॐ अस्य श्री दारुण सप्तक स्तोत्र महामंत्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, शरभशालुव कालाग्नि रुद्रो देवता, खं बीजं,

ह्रीं शक्तिः, हुं फट् कीलकम्, मम सर्वशत्रु विपत्ति नाशयर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास व हृदयादिन्यास निम्नवत् हैंः-

ॐ ह्रां खां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं खीं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रूं खूं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ॐ ह्रैं खैं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं खौं ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रः खः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानमंत्रः-

चन्द्रार्काग्निस्त्रि दृष्टिःकुलिशवरनखश्चंचलोऽत्युग्रजिह्वः।

काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगौ भैरवो वाडवाग्निः।।

ऊरूस्थौ व्याधिमृत्यु शरभवरखगश्चण्डवाताति वेगः।

संहर्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।।

स्तोत्रम्ः-

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ सालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।

कोपोद्रेकाऽतिनिर्यन् निखिल परिचरत् ताम्रभार प्रभूतं
ज्वालामालाग्र दग्ध स्मरतनु सकलं त्वामहं शालुवेशं।
याचे त्वत्पाद पद्म प्रणिहितमनसं द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः
तस्यप्राणप्रयाणं परशिव! भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम्।।

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म-वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।1।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट्

घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

शम्भो! त्वद्धस्तकुन्तक्षत रिपुहृदयान्नि स्रवल्लोहितौघं

पीत्वापीत्वाऽतिदीर्घा दिश-दिशि विचरास्त्वणा गणाश्चण्डमुख्याः।

गर्जन्तुक्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोलाः

संत्रस्ता ब्रह्मदेवाः शरभ खगपते त्राहि नः शालुवेश।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म-वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।2।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं

याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः।

श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थित कुलिशकराघात वक्षःस्थलस्य

प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयान्तु।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।3।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पदकमल ध्यान निर्धूतपापाः

कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहग कुलपते खेलया बद्धमूर्ते।

तूर्णं त्वत्पादपद्म प्रधृतपरशुना तुण्डखण्डीकृतांगः

सद्द्वेषी यातु याम्यं पुरमति कलुषं कालपाशग्रबद्धः।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।4।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

भीम श्रीशालुवेश प्रणतभयहर प्राणजिद् दुर्मदानां

याचेऽहं चास्य वर्ग प्रशमनमिह ते स्वेच्छा बद्धमूर्ते।

त्वामेवाशु त्वद्ङ्घ्र्यष्टकनख विलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य

प्राणायान्तु प्रयाणं प्रकटित हृदयस्यायुरल्पायतेश।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म-वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणाच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।5।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

श्रीशूलं ते कराग्रस्थित-मुसलगदा वृत्तवात्याभिघातात्

यातायातारियूथं त्रिदश विघटनोद्धूतरक्तच्छटार्द्रम्।

सदृष्टवाऽऽयोधने ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदन्तु नाना

भूतावेतालपूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म-वर्म ठः ठः सर्वशत्रूनाणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।6।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

अल्पं दोर्दण्डबाहु प्रकटित विनमच्चण्ड कोदण्डमुक्तै

र्बाणदिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य तस्य

प्राणावसानं परशरभ विभोऽहंत्वदिज्या प्रभावैः

तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यान्तहेतो।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल-ज्वल वैरिकुलं दह-दह वर्म-वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।7।।

।।फलश्रुति।।

इतिनिश प्रयतिस्तुनिरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन्।

प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह दारुणसप्तकम्।।8।।

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम्।

भानुवारं समारभ्य मंगलान्तं जपेत् सुधीः।।9।।

रात्रिकाल में दक्षिण दिशा की ओर मुख करके रविवार से मंगलवार तीन दिनों तक इस महास्तोत्र के दस पाठ करें। देवता के उग्र स्वभाव के कारण ही ऐसा निर्दिष्ट होगा। परन्तु सामान्य सिद्धिकरण के लिये कम से कम 108 पाठ तो करने ही चाहिये। इसके अतिरिक्त अति दुष्कर कार्य की सिद्धि हेतु इससे अधिक संख्या में भी जप करना आवश्यक हो जाता है। इन सभी तथ्यों का निर्धारण गुरु, शिष्य की अवस्था एवं कार्य के अनुसार ही करते हैं। अतः साधारण साधक अपनी सूझबूझ से आकाशभैरव के काम्य प्रयोग न करे तो उचित होगा।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana